



INTERNATIONAL JOURNAL OF TRENDS IN EMERGING RESEARCH AND DEVELOPMENT

INTERNATIONAL JOURNAL OF TRENDS IN EMERGING RESEARCH AND DEVELOPMENT

Volume 2; Issue 3; 2024; Page No. 129-133

Received: 21-02-2024

Accepted: 29-03-2024

विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय के शिक्षकों के आधुनिकीकरण के स्तर का अध्ययन एवं तुलना

¹Sudeep Srivastava and ²Dr. Sachin Kumar Prabhakar

¹Research Scholar, Sunrise University, Alwar, Rajasthan, India

²Assistant Professor, Sunrise University, Alwar, Rajasthan, India

DOI: <https://doi.org/10.5281/zenodo.14699766>

Corresponding Author: Sudeep Srivastava

सारांश

इस अध्ययन का उद्देश्य उच्च शिक्षा शिक्षकों के बीच आधुनिकीकरण की जांच करना है। कानपुर विश्वविद्यालय और विभिन्न सरकारी विभागों के 420 उच्च शिक्षा शिक्षक। इस अध्ययन में कानपुर के मान्यता प्राप्त डिग्री कॉलेजों ने भाग लिया। नमूना चुनने के लिए यादृच्छिक नमूनाकरण तकनीक का उपयोग किया गया था। 420 नमूना शिक्षकों में से 120 कानपुर विश्वविद्यालय से और 300 विभिन्न सरकारों से लिए गए थे। कानपुर के मान्यता प्राप्त डिग्री कॉलेज। चयनित नमूने से डेटा एकत्र करने के लिए आर. एस सिंग के आधुनिकीकरण पैमाने का उपयोग किया गया था। डेटा का विश्लेषण करने के लिए प्रतिशत, माध्य, मानक विचलन और टी-परीक्षण का उपयोग किया गया।

मुख्य शब्द: आधुनिकीकरण, शिक्षकों, शिक्षा, संपूर्ण, समस्या, समाज और परीक्षण

प्रस्तावना

हमारे देश में शिक्षा के प्रतिमान में बदलाव और विकास के वैश्विक परिप्रेक्ष्य से (दुनिया की) बढ़ती अंतरसंबंध और अंतरनिर्भरता ने गणतंत्र के उच्च विद्यालयों के शिक्षकों को फिर से प्रशिक्षित करने के लिए शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों पर अभूतपूर्व मांग रखी है। वर्तमान में, उच्च शिक्षा संस्थान शिक्षकों के व्यावसायिक विकास में भी रुचि रखते हैं, क्योंकि शिक्षकों में बदलती सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों के अनुकूल ढलने की क्षमता बढ़ती है। विश्वविद्यालय शिक्षकों की नई दक्षताओं के निर्माण के लिए एक तंत्र के रूप में शिक्षकों के व्यावसायिक विकास के अनुकूलन के परिणामस्वरूप प्रतिस्पर्धात्मकता। स्वयं शिक्षकों के लिए व्यावसायिक विकास का मूल्य निर्विवाद है - यह उनकी योग्यता, क्षमता, उनकी शिक्षण गतिविधियों से संतुष्टि की वृद्धि है, और इससे भी महत्वपूर्ण है - आत्म-विकास। अध्ययन ने एकीकृत शैक्षिक अंतरिक्ष प्रणाली प्रशिक्षण की कमी, संकाय के राष्ट्रीय डेटाबेस (विकसित किया जाना) शिक्षकों को बढ़ाने के लिए मानदंड, संकेतक और गुणवत्ता मूल्यांकन विधियों की एकीकृत प्रणाली की कमी जैसी समस्याओं की पहचान की। पेशेवर अलगाव की एक प्रणाली है और कर्मियों के प्रशिक्षण के लिए अंतरराष्ट्रीय दृष्टिकोण की कमी है।

व्यावसायिक विकास संस्थान को विदेशी शैक्षणिक अनुभव की सर्वोत्तम उपलब्धियों पर और अधिक विचार करने, सक्षम अंतरराष्ट्रीय संगठनों (यूनेस्को, यूरोप की परिषद, संयुक्त राष्ट्र, ब्रिटिश कंसल) के साथ सहयोग, आधुनिक दुनिया में शिक्षा के विकास की संभावनाओं का निर्धारण करने की आवश्यकता है। लेकिन साथ ही, निश्चित रूप से, हमारी मानसिकता, जातीय संस्कृति और पहचान पर भी विचार करना चाहिए। फीडबैक की कमी (शैक्षिक प्रक्रिया में प्रतिभागियों और शैक्षिक सेवाओं के शिक्षक प्रशिक्षण के उपभोक्ताओं की संतुष्टि के स्तर का निर्धारण), शैक्षिक प्रक्रिया में छात्रों को पढ़ाने के नए रूपों और तरीकों, प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों की शुरुआत पर अपर्याप्त रूप से विकसित वैज्ञानिक और पद्धति संबंधी सिफारिशें हैं। क्षेत्र में और अन्य। स्थिति इस तथ्य से और भी गंभीर हो गई है कि हाई स्कूल के शिक्षक लगभग कभी भी खाना नहीं बनाते हैं। हमारे देश के शैक्षणिक उच्च विद्यालयों में प्रमाणीकरण के दौरान पाया गया कि सभी शिक्षकों के पास बुनियादी व्यावसायिक शिक्षक शिक्षा भी नहीं है। वर्तमान शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान कल जिस स्थिति में शिक्षकों को स्कूल के लिए तैयार कर रहे हैं, उस पर काबू पाना जरूरी है। शिक्षा को एक सतत प्रक्रिया माना जाता है जहां एक व्यक्ति जीवन

के विभिन्न चरणों में सभी अनुभव, ज्ञान, अंतर्दृष्टि, धारणा और ज्ञान शिक्षा के विभिन्न तरीकों - औपचारिक, अनौपचारिक और गैर-औपचारिक के माध्यम से प्राप्त करता है। शिक्षा एक ऐसा कार्य या समझ है जिसका किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व पर प्रभावशाली प्रभाव पड़ता है। इसे परिवर्तन, आधुनिकीकरण, परिवर्तन और मानव अनुभव की बेहतर समझ के साधन के रूप में भी माना जाता है। इसे न केवल सामाजिक परिवर्तन का एक उपकरण माना जाता है, बल्कि राष्ट्रीय विकास के लिए एक संपत्ति भी माना जाता है। शिक्षा से तात्पर्य विकासात्मक प्रक्रिया से भी है जिसमें एक व्यक्ति लगातार अपने सामाजिक, भौतिक और आध्यात्मिक परिवेश को विभिन्न तरीकों से अपनाता है। तेजी से आर्थिक विकास और तकनीकी प्रगति हासिल करने में शिक्षा एक महत्वपूर्ण एकल कारक है।

भारतीय शिक्षा आयोग (1964-66) के अनुसार, "शिक्षा को लोगों के जीवन, जरूरतों और आकांक्षाओं से संबंधित होना चाहिए और इस तरह सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिवर्तन का शक्तिशाली साधन बनाना चाहिए।" लॉज (2014) ने ठीक ही बताया है कि, "जो कुछ भी हमारे क्षितिज को व्यापक बनाता है, हमारी अंतर्दृष्टि को गहरा करता है, हमारी प्रतिक्रियाओं को परिष्कृत करता है, हमारे विचारों और भावनाओं को उत्तेजित करता है वह हमें शिक्षित करता है।" महात्मा गांधी (1937) ने बताया है कि, "शिक्षा से मेरा तात्पर्य बच्चे और मनुष्य - शरीर, मन और आत्मा - में सर्वश्रेष्ठ का सर्वांगीण चित्रण है।" यह एक ऐसी शिक्षा है जो व्यक्ति को कई प्रकार के दृष्टिकोण, कौशल सीखने और ज्ञान और अनुभव प्राप्त करने, सीखने के माध्यम से अपने स्वयं के व्यक्तित्व को व्यक्त करने और साझा करने और इसे लचीले ढंग से अनुकूलित करने में सक्षम बनाती है।

साहित्य की समीक्षा

बखमत, एट अल. (2022) इमर्सिव प्रौद्योगिकियों ने शैक्षिक क्षेत्र में प्रभावशीलता और प्रासंगिकता दिखाई है। सामाजिक-सांस्कृतिक प्रकृति की वैश्विक चुनौतियों के कारण नवीन शिक्षण वातावरण का उपयोग आवश्यक हो गया है जो पारंपरिक शैक्षिक प्रणाली का विकल्प बन गया है। शोध का उद्देश्य शिक्षक के पेशेवर कौशल समूह में व्यापक प्रौद्योगिकियों की स्थिति का विश्लेषण करना है। लेख का उद्देश्य छोटी और लंबी अवधि में शैक्षिक रणनीतियों में व्यावहारिक तत्वों को शामिल करना है, जो वीआर/एआर/एमआर/एक्सआर का उपयोग करके शैक्षिक प्रक्रिया को व्यवस्थित करने के लिए आवश्यक शिक्षक की दक्षताओं को निर्दिष्ट करते हैं। अध्ययन की पद्धति सामान्य वैज्ञानिक, वैज्ञानिक-शैक्षणिक और वैज्ञानिक-तकनीकी साधनों के उपयोग से जुड़ी है जो शिक्षा में उनके उपयोग की प्रक्रिया में आभासी वास्तविकता तत्वों की सामग्री और रूप का विश्लेषण करने की अनुमति देती है। अनुसंधान की एक आशाजनक दिशा शिक्षा के पारंपरिक आमने-सामने और अभिनव आभासी प्रारूप के बीच संतुलन के चश्मे के माध्यम से एक शिक्षक की पेशेवर दक्षताओं पर विचार करना है। नतीजतन, इमर्सिव प्रौद्योगिकियां शैक्षिक क्षेत्र में एक प्रासंगिक शिक्षण वातावरण बन जाती हैं, जिससे शिक्षक की पेशेवर दक्षताओं की तैयारी में आधुनिकीकरण होता है, जिनके पास वीआर-प्रारूप में सीखने की प्रक्रिया को व्यवस्थित करने में सक्षम होने के लिए उपयुक्त डिजिटल कौशल होना चाहिए।

लिज़ामा, एंड्रिया। (2021)। अकादमिक साहित्य का तर्क है कि सामाजिक गतिशीलता के व्यक्तिपरक अनुभव की समझ

सामाजिक गतिशीलता के उद्देश्य माप से भिन्न होती है - आंदोलन के व्यावसायिक पैटर्न के आधार पर - क्योंकि लोग सामाजिक संरचना (सामाजिक परिवर्तन) के परिवर्तनों और सामाजिक संरचना (सामाजिक) के भीतर परिवर्तनों को मिलाते हैं। गतिशीलता, जिसके परिणामस्वरूप सामाजिक असमानताओं की सीमित भावना उत्पन्न होती है। यह लेख चिली के स्कूल-शिक्षकों के जीवन पथ के आख्यानो के लेंस के माध्यम से सामाजिक गतिशीलता की व्यक्तिपरक समझ की पड़ताल करता है। विधिपूर्वक, सैटियागो में रहने वाले 41 शिक्षकों के साथ गहन साक्षात्कार के माध्यम से डेटा एकत्र किया गया था। उन्हें अपने जीवन में मुख्य बदलावों के साथ एक समयरेखा बनाने के लिए भी कहा गया। इस लेख के निष्कर्षों से पता चलता है कि शिक्षकों द्वारा उनके प्रक्षेप पथ का मूल्यांकन सबसे पहले उनके जीवन की संतुष्टि से संबंधित आख्यानो के रूप में व्यक्त किया जाता है। सामाजिक तुलना के विभेदक रूप जो शिक्षकों द्वारा उनके प्रक्षेप पथ के मूल्यांकन से उभरते हैं, यह प्रकट करते हैं कि लोग सामाजिक असमानताओं की व्यापक संरचना के भीतर खुद को कैसे स्थापित करते हैं। परिणामस्वरूप, शिक्षकों के उनके प्रक्षेप पथ के मूल्यांकन में सामाजिक गतिशीलता के अंतर्निहित या स्पष्ट आख्यान शामिल होते हैं जो अक्सर सामाजिक परिवर्तन और जीवन-पाठ्यक्रम परिवर्तन की व्यक्तिपरक भावना से जुड़े होते हैं। यह लेख प्रदर्शित करता है कि सामाजिक गतिशीलता की सामान्य समझ संभावित रूप से सामाजिक गतिशीलता के बहुआयामी और तरल मॉडल के साथ-साथ लोगों के रोजमर्रा के जीवन को प्रभावित करने वाली असमानताओं के व्यावहारिक अनुभवों को संबोधित करके अकादमिक समझ को उजागर करती है।

बेज़िरोविक, सेनाड और अन्य। (2015)। सामाजिक परिवर्तनों का शिक्षा प्रणालियों पर व्यापक प्रभाव पड़ता है। हाल के दशकों में समाज में परिवर्तन और तीव्र तकनीकी विकास के कारण शैक्षिक प्रणाली में सुधार आवश्यक हो गया है। शिक्षकों की सामाजिक भूमिका, साथ ही उनकी जिम्मेदारियाँ और दायित्व भी काफी बदल गए हैं। शिक्षकों के कार्य का दायरा और जिम्मेदारियाँ तो बड़ी हो गई हैं, लेकिन समाज में उनकी स्थिति बहुत कम है। बढ़ती जिम्मेदारी और दायित्व शिक्षकों के लिए निराशा और तनाव का कारण बनते हैं। उनकी विश्वविद्यालयी शिक्षा को नई आवश्यकताओं और उनके दायित्वों के अनुरूप ढाला जाना चाहिए। उनके कार्य के दौरान स्थायी शिक्षा को प्रशिक्षण के रूप में कार्य करना चाहिए, ताकि वे आधुनिक समय में उनके सामने आने वाले नए कर्तव्यों और जिम्मेदारियों से निपट सकें।

हुसैन, अतहर और अन्य। (2023)। यह अध्ययन शिक्षक शिक्षक बनने के कारणों का पता लगाने, विश्वविद्यालय स्तर पर शिक्षक प्रशिक्षकों की भलाई का विश्लेषण करने और जनसांख्यिकीय चर के आधार पर शिक्षकों की राय के बीच अंतर का पता लगाने के लिए आयोजित किया गया था। रहीम यार खान के दो कॉलेजों और तीन विश्वविद्यालयों के शिक्षा विभाग के सभी पुरुष और महिला शिक्षक (31 शिक्षक) और 1347 पुरुष और महिला छात्र अध्ययन की आबादी थे। जनगणना नमूना तकनीक का उपयोग शिक्षकों की पूरी आबादी को एक नमूने के रूप में चुनने के लिए किया गया था क्योंकि शिक्षकों की आबादी छोटी थी और छात्रों के नमूने का चयन करने के लिए स्तरीकृत यादृच्छिक नमूना तकनीक का उपयोग किया गया था। अंत में, शिक्षा विभाग से 31 शिक्षकों (19 पुरुष और 12 महिलाएं) और 674 छात्रों (339 पुरुष और 335 महिलाएं) का चयन किया गया। शिक्षकों के लिए 54-आइटम प्रश्नावली और छात्रों के लिए 32-आइटम प्रश्नावली, स्व-संरचित का

उपयोग किया गया था। प्रतिभागियों के बीच शिक्षकों के लिए इकतीस प्रश्रावली और छात्रों के लिए छह सौ चौहत्तर प्रश्रावली वितरित की गई। शोधकर्ता ने एसपीएसएस का उपयोग करके 705 प्रतिभागियों के एकत्रित डेटा का विश्लेषण करने के लिए वर्णनात्मक और अनुमानात्मक दोनों सांख्यिकीय तकनीकों का उपयोग किया। परिणामों से पता चला कि अधिकांश इच्छुक शिक्षकों को शिक्षण पेशे के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, हालांकि शिक्षण पेशे में पहले से ही शामिल लोगों को कुछ चिंताएँ हैं। शिक्षकों को उनकी बाहरी जरूरतों को पूरा करने के लिए एक प्रेरक वातावरण और कल्याण भी प्रदान किया जाना चाहिए जो प्रतिबद्ध शिक्षकों के रूप में शिक्षण पेशे में उनकी विशेषज्ञता का पता लगाने के लिए उनकी आंतरिक प्रेरणा को बढ़ाएगा।

मार्टिंसोन, बैबा एट अल (2024)। लेख "टीचिंग टू बी" परियोजना की शुरुआत से शुरू होता है, जो यूरोपीय नीति प्रयोग के तहत एक पहल है, जो सामाजिक और भावनात्मक शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षकों के पेशेवर विकास और कल्याण का समर्थन करने पर केंद्रित है। इसके बाद, यह पेशेवर कल्याण के विभिन्न कल्याण मॉडलों और दृष्टिकोणों की प्रस्तुति पर प्रकाश डालता है। यह इस क्षेत्र के भीतर सैद्धांतिक दृष्टिकोणों की विविधता को उजागर करता है, जिनमें से कुछ एक-दूसरे के साथ मेल खाते हैं जबकि अन्य अलग-अलग होते हैं। इसके साथ ही, यह ईमानदारी से अंध स्थानों को स्वीकार करता है और भविष्य के लिए संभावित नए, वैकल्पिक रास्ते प्रस्तावित करता है। यह लेख मौलिक विचार-विमर्श की प्रस्तावना के रूप में कार्य करता है जिसने "टीचिंग टू बी" परियोजना के साथ-साथ हमारे भविष्य-उन्मुख विचारों को विशेष रूप से प्रभावित किया है। इस परियोजना में शिक्षकों की उनके पेशे की भलाई पर विशेष ध्यान दिया गया है।

अनुसंधान क्रियाविधि

नमूना

वर्तमान अध्ययन के डेटा में 420 उच्च शिक्षा शिक्षक शामिल थे जो कि कानपुर विश्वविद्यालय और विभिन्न सरकारों की कुल आबादी से एकत्र किए गए थे। कानपुर के मान्यता प्राप्त डिग्री कॉलेज। प्रत्येक विश्वविद्यालय और कॉलेज के शिक्षक को नमूने में चयनित होने के समान अवसर के साथ यादृच्छिक नमूनाकरण तकनीक का उपयोग किया गया था। 420 नमूना शिक्षकों में से 120 कानपुर विश्वविद्यालय से और 300 विभिन्न सरकारों से लिए गए थे। कानपुर के मान्यता प्राप्त डिग्री कॉलेज।

तालिका 1: नमूने का विवरण

	पुरुष			महिला			कुल
	वरिष्ठ	कनिष्ठ	कुल	वरिष्ठ	कनिष्ठ	कुल	
विश्वविद्यालय शिक्षक	32	51	83	20	17	37	120
कॉलेज शिक्षक	60	140	200	40	60	100	300
कुल			283			137	420

उपकरणों का इस्तेमाल

अध्ययन के उद्देश्यों को साकार करने के लिए डेटा संग्रह के लिए निम्नलिखित उपकरण प्रशासित किए गए थे:

- नदीम-इजलाल का सामाजिक जागरूकता पैमाना (NISAS)। यह तीन घटकों पर आधारित है। ज्ञान, दृष्टिकोण और निदान और इन तीन घटकों को भी दो श्रेणियों अर्थात् सामाजिक व्यवस्था और सामाजिक बुराइयों में वर्गीकृत किया गया है।

पैमाने में चौंसठ आइटम हैं और प्रत्येक कथन को 'दृढ़ता से सहमत' से लेकर 'दृढ़ता से असहमत' तक की पांच-बिंदु रेटिंग दी गई है।

- आरएस सिंह का आधुनिकीकरण पैमाना। यह चार घटकों पर आधारित है: सामाजिक-धार्मिक, विवाह, महिलाओं की स्थिति और शिक्षा। पैमाने में 60 आइटम हैं और लिकर्ट प्रकार का पैमाना होने के कारण, विषयों ने छह-बिंदु पैमाने पर अपनी प्रतिक्रिया का संकेत दिया, जिसमें पैमाने के बिंदु 'बेहद सहमत' से लेकर 'बेहद असहमत' तक थे।
- सिंह और जोसेफ जीवन संतुष्टि स्केल। इसमें 5-बिंदु पैमाने पर मूल्यांकित 35 आइटम शामिल हैं। इसमें जीवन संतुष्टि के पांच आयाम शामिल हैं - रोजमर्रा की गतिविधियों में आनंद लेना, जीवन को सार्थक मानना, सकारात्मक आत्म-छवि रखना, खुश और आशावादी दृष्टिकोण रखना और लक्ष्यों को प्राप्त करने में सफलता महसूस करना।
- व्यावसायिक विकास सूचकांक स्केल (पीडीआईएस): विषयों के व्यावसायिक विकास के स्तर को मापने के लिए प्रोफेसर (डॉ.) एनए नदीम की देखरेख में अन्वेषक (श्री तारिक अहमद वानी) द्वारा इसका निर्माण किया गया था। यह पाँच आयामों पर आधारित है, अर्थात् व्यावसायिक ज्ञान, प्रशिक्षण और विकास, शिक्षण योग्यता और व्यावसायिक अभ्यास, व्यावसायिक प्रतिबद्धता और व्यावसायिक नैतिकता। पैमाने में 40 आइटम हैं और प्रत्येक कथन की तीन-बिंदु रेटिंग है जो हाँ, अनिश्चित और नहीं प्रकार पर आधारित है।

सांख्यिकीय उपचार

एकत्र किए गए डेटा को निम्नलिखित सांख्यिकीय उपचार के अधीन किया गया:

- को PERCENTAGE
- t- परीक्षण

तालिका 2: आधुनिकीकरण के स्तर पर उच्च शिक्षा शिक्षकों की समग्र तुलना दर्शाती है (एन=420)

स्तरों	स्कोर रेंज	उच्च शिक्षा. शिक्षकों की	% आयु
उच्च	143 और ऊपर	32	7.6
औसत	109-142	325	77.4
कम	75-108	63	15.0
कुल		420	100.0

उपरोक्त तालिका स्पष्ट रूप से इंगित करती है कि उच्च शिक्षा शिक्षकों के सभी नमूनों में से 77.3% का एक महत्वपूर्ण अनुपात औसत आधुनिकीकरण स्तर का पाया गया है, 15% शिक्षकों को निम्न श्रेणी में वर्गीकृत किया गया था और केवल 7.6% के पास उच्च आधुनिकीकरण स्तर था।

तालिका 3: आधुनिकीकरण के स्तर पर विश्वविद्यालय और कॉलेज शिक्षकों की तुलना दिखा रहा है

स्तरों	स्कोर रेंज	विश्वविद्यालय शिक्षकों की	% आयु	कॉलेज शिक्षकों की	% आयु
उच्च	143 और ऊपर	17	14.2	15	5.0
औसत	109-142	93	77.5	232	77.3
कम	75-108	10	8.3	53	17.7
कुल		120	100.0	300	100.0

उपरोक्त तालिका पर एक त्वरित नज़र डालने से पता चलता है कि 120 विश्वविद्यालय शिक्षकों में से 77.5% के पास औसत आधुनिकीकरण स्तर है, 14.2% के पास उच्च आधुनिकीकरण स्तर है और 8.3% के पास निम्न आधुनिकीकरण स्तर पाया गया है। इसी तरह, 300 कॉलेज शिक्षकों में से 5% उच्च आधुनिकीकरण स्तर दिखाते हैं, 77.3% औसत आधुनिकीकरण

स्तर दिखाते हैं और 17.7% कम आधुनिकीकरण स्तर दिखाते हैं। तालिका से यह बिल्कुल स्पष्ट है कि दोनों समूहों में से, विश्वविद्यालय शिक्षक उच्च आधुनिकीकरण स्तर दिखाते हैं। उपरोक्त परिणामों के आलोक में, हमारा उद्देश्य क्रमांक 2 जो इस प्रकार है, "विश्वविद्यालय और कॉलेज शिक्षकों के आधुनिकीकरण के स्तर का अध्ययन और तुलना करना" पूरा हो गया है।

तालिका 4: आधुनिकीकरण के विभिन्न आयामों पर विश्वविद्यालय और कॉलेज शिक्षकों के बीच औसत अंतर का समग्र महत्व दर्शाता है (एन=420)

क्षेत्रों	समूह	एन	अर्थ	एसडी	टी मूल्य	सिग. स्तर
सामाजिक-धार्मिक	विश्वविद्यालय शिक्षक	120	29.98	5.046	3.93	सिग. 0.01 पर स्तर
	कॉलेज शिक्षक	300	27.95	4.024		
शादी	विश्वविद्यालय शिक्षक	120	34.72	4.947	5.68	सिग. 0.01 पर स्तर
	कॉलेज शिक्षक	300	31.81	4.191		
की स्थिति औरत	विश्वविद्यालय शिक्षक	120	32.53	5.834	2.62	सिग. 0.01 पर स्तर
	कॉलेज शिक्षक	300	30.84	6.280		
शिक्षा	विश्वविद्यालय शिक्षक	120	29.69	6.058	0.94	महत्वपूर्ण नहीं है
	कॉलेज शिक्षक	300	29.10	5.130		
कुल	विश्वविद्यालय शिक्षक	120	126.93	15.789	4.44	सिग. 0.01 स्तर पर
	कॉलेज शिक्षक	300	119.69	13.175		

उपरोक्त तालिका का अवलोकन आधुनिकीकरण के विभिन्न आयामों पर विश्वविद्यालय और कॉलेज शिक्षकों के बीच समग्र औसत महत्व को दर्शाता है। तालिका से पता चलता है कि चार आयामों में से दो समूह कुल औसत स्कोर पर 0.01 के स्तर पर महत्वपूर्ण पाए गए। यह अंतर 0.01 के स्तर पर महत्वपूर्ण है, तीन आयामों यानी सामाजिक-धार्मिक, विवाह और महिलाओं की स्थिति का औसत स्कोर विश्वविद्यालय के शिक्षकों के पक्ष में है, जिसका अर्थ है कि उन्होंने आधुनिकीकरण के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित किया है जिसमें वैज्ञानिक और संस्थागत संशोधनों की एक श्रृंखला शामिल है। तालिका के आगे अवलोकन से पता चलता है कि आधुनिकीकरण के शिक्षा आयाम पर दो समूहों के औसत स्कोर के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। इसका तात्पर्य यह है कि दोनों समूहों के पास शिक्षा संबंधी मुद्दों पर समान ज्ञान है।

उपरोक्त परिणामों के प्रकाश में, हमारी परिकल्पना संख्या 2 जो इस प्रकार है, "आधुनिकीकरण के स्तर पर विश्वविद्यालय और कॉलेज के शिक्षकों के बीच एक महत्वपूर्ण अंतर है" को स्वीकार किया जाता है।

निष्कर्ष

आधुनिकीकरण के सामाजिक-धार्मिक, विवाह और महिलाओं की स्थिति के आयामों पर विश्वविद्यालय शिक्षकों और कॉलेज शिक्षकों के बीच उच्च शिक्षा शिक्षकों के समग्र नमूने में महत्वपूर्ण अंतर है। यह पाया गया कि विश्वविद्यालय के शिक्षकों ने आधुनिकीकरण के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित किया है जिसमें कॉलेज के शिक्षकों की तुलना में वैज्ञानिक, शैक्षिक, व्यावहारिक और संस्थागत संशोधन और पुनर्गठन की एक श्रृंखला शामिल है। यह भी पाया गया कि आधुनिकीकरण के शिक्षा आयाम पर विश्वविद्यालय शिक्षकों और कॉलेज शिक्षकों के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

संदर्भ

1. बखमत, नतालिया, कुटी, कतेरीना, टॉलचिवा, हन्ना, पुश्कोरोवा, तमारा। भावी शिक्षकों के व्यावसायिक प्रशिक्षण

- का आधुनिकीकरण: इमर्सिव प्रौद्योगिकियों की भूमिका पर। भविष्य की शिक्षा। 2022;2:28-37। DOI: 10.57125/FED/2022.10.11.22।
2. लिज़ामा, एंड्रिया। चिली में जीवन संतुष्टि, सामाजिक गतिशीलता और असमानताओं की व्यावहारिक भावना के बारे में शिक्षकों की कहानियाँ। समाजशास्त्रीय अनुसंधान ऑनलाइन। 2021;27:136078042110061। DOI: 10.1177/13607804211006106।
3. बेसिरोविच, सेनाड, अकबरोव, अज़मत। शैक्षिक प्रणाली में शिक्षक की भूमिका और जिम्मेदारियों पर सामाजिक परिवर्तनों का प्रभाव। जर्नल ऑफ लर्निंग एंड इन्वैशन। 2015;8:21-35. DOI: 10.29302/JOLI.2015.8.2।
4. हुसैन, अतहर, अरशद, मुबशरा, अरशद, लारैब, हुसैन, बशीर। शिक्षक-शिक्षक बनने का कारण: शिक्षक-शिक्षकों के उद्देश्यों और कल्याण पर एक अध्ययन। अंतर्राष्ट्रीय सामाजिक विज्ञान और उद्यमिता जर्नल। 2023;3:112-137. DOI: 10.58661/IJSSE.v3i3.181।
5. विदिक, टोमिस्लावा, जुरानोविक, मरीना, क्लासनिक, इरेना। शिक्षक समर्थन के बारे में छात्रों की धारणाएँ, और उनके स्कूल और जीवन से संतुष्टि, कोविड-19 महामारी से पहले और बाद में। विज्ञान, इंजीनियरिंग और शिक्षा में संज्ञानात्मक अनुसंधान के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल। 2023;11:15-25। DOI: 10.23947/2334-8496-2023-11-1-15-25।
6. क्यूई, झेंगनान। कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की श्रृंखला में युवा शिक्षकों के व्यावसायिक विकास परिवेश पर। पर्यावरण और सार्वजनिक स्वास्थ्य जर्नल। 2022;1-9. DOI: 10.1155/2022/5370757।
7. राज्य, तालिडा, केर्न, ली। सामाजिक, भावनात्मक और व्यवहार संबंधी समस्याओं वाले हाई स्कूल के छात्रों के बीच जीवन संतुष्टि। सकारात्मक व्यवहार हस्तक्षेप जर्नल। 2017 19:1098300717714571. DOI: 10.1177/1098300717714573।
8. हेचनिक, नतालिया, वासियुक, ओक्साना, मात्सेंको, लेस्या, फ़ोलोमीयेवा, नतालिया, कोरियाकिन, ओलेक्सी, व्होव्स्का,

- स्वितलाना। वैश्विक चुनौतियों के सामने विश्व संदर्भ में XX/सदी की उच्च शिक्षा का विकास। पाठ्यचर्या और शिक्षण जर्नल। 2023;12:96. DOI: 10.5430/JCT.v12n5p96।
9. टॉर्शिन, व्लादिमीर, स्वेशनिकोव, दिमित्री, याकुनिना, ऐलेना, बाकेवा, जरीना, स्टार्सिनोव, यूरी, मनकेवा, ओल्गा, किवलेनोक, तातियाना, आर्पेटिएवा, मारियम। चिकित्सा विश्वविद्यालय में अध्यापन और उच्च शिक्षा प्रणाली का आधुनिकीकरण। शिक्षा और सूचना प्रौद्योगिकी के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल। 2020;14:97-107। DOI: 10.46300/9109.2020.14.12।
 10. ऑर्टन, फ्लोरिका, सिमुत, रमोना, सिमुत, सिप्रियन। K-12 शैक्षिक प्रणाली में आत्म-प्रभावकारिता, नौकरी से संतुष्टि और शिक्षक कल्याण। पर्यावरण अनुसंधान और सार्वजनिक स्वास्थ्य के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल। 2021;18:1-32। DOI: 10.3390/ijerph182312763।
 11. तास्किरन, आयसे। उच्च शिक्षा में सोशल नेटवर्किंग: शिक्षकों और शिक्षार्थियों की धारणाएँ। मानविकी और सामाजिक विज्ञान जर्नल। 2019;4:339-348. DOI: 10.20448/801.42.339.348।
 12. लोपुखोवा, यूलिया, मेकेवा, ऐलेना। डिजिटल दुनिया में विश्वविद्यालय शिक्षक व्यावसायिक विकास। संवर्धन और शिक्षाशास्त्र के जर्नल। 2019 DOI: 10.1007/978-3-030-11935-5_49।
 13. इसिक, मेटिन। उच्च शिक्षा प्रणाली से विश्वविद्यालय के छात्रों की अपेक्षाएँ और संतुष्टि का स्तर। शैक्षिक पद्धति के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल। 2022;8:163-178. DOI: 10.12973/ijem.8.1.163।
 14. फ़ाहर्नर्ट, बीटिक्स। शिक्षण के मामले - 21वीं सदी की शुरुआत में शैक्षणिक व्यावसायिक विकास। एफईएमएस माइक्रोबायोलॉजी लेटर्स। 2015, 362. DOI: 10.1093/femsle/fnv156।

Creative Commons (CC) License

This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.